शोध मंथन, 2018 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X, Impact Factor 3.8942 (ICRJIFR)
UGC Approved Journal No. 40908

गरियाबन्द जिले के साप्ताहिक बाजारों में अनुसूचित जाति एवं जनजाति की भूमिका– एक भौगोलिक विश्लेषण

डॉ. (श्रीमती) ज़ेड टी. खान* & श्रीमती राजवंश कौर कोहली**

**पूर्व प्रो. भूगोल अध्ययनशाला, पूर्व अध्यक्ष एवं डीन विज्ञान संकाय पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)*

***शोध अध्येता, सहायक प्राध्यापक, भूगोल ,संत गुरुघासीदास शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय कुरूद, जिला–धमतरी (छ.ग.)*

सारांश

ग्रामीण अंचलों की निर्भरता साप्ताहिक बाजारों पर होती है। वनाच्छादित, विषम भूमि तथा कृषि प्रधान मैदानी क्षेत्र में लोगों की लेन–देन की आर्थिक गतिविधियाँ सामयिक बाजारों के रूप में बदल जाती है। शहर की पहुँच से दूर ग्रामीण जनसमूह इन बाजार केन्द्रों में क्रय–विक्रय के साथ–साथ मेल–मिलाप, मनोरंजन, बैठक, धार्मिक अनुष्ठान आदि कार्य भी सम्पन्न करते हैं। ग्रामीण जनजीवन में विपणन क्रिया–कलापों का स्वरूप सीमित आवश्यकताओं के रूप में दिखाई देता है। अध्ययन क्षेत्र के अनुसूचित जाति एवं जनजातियों के जीवन स्तर का प्रभाव साप्ताहिक बाजारों के आकार प्रभाव क्षेत्र, बाजार चक्र व विक्रेता–उपभोक्ता व्यवहार प्रतिरूप एवं पदानुक्रम पर पड़ता है।

मूल शब्द

पदानुक्रम, बाजार चक्र, प्रभाव क्षेत्र, व्यवहार प्रतिरूप

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः

डॉ० (श्रीमती) जेड़ टी. खान *
&
श्रीमती राजवंश कौर कोहली **

गरियाबन्द जिले के साप्ताहिक बाजारों में अनुसूचित जाति एवं जनजाति की भूमिका– एक भौगोलिक विश्लेषण

शोध मंथन, मार्च 2018,
पेज सं0 123–134

Article No. 19
http://anubooks.com
?page_id=581

अध्ययन का उद्देश्य

साप्ताहिक बाजारों की भौगोलिक स्थिति, प्रभाव क्षेत्र, पदानुक्रम व क्रेता–विक्रेता के व्यावहारिक प्रतिरूप को ज्ञात करना है।

शोध परिकल्पना

अनुसूचित जाति एवं जनजातियों का जीवन–स्तर साप्ताहिक बाजारों की गतिविधियों पर अपना प्रभाव डालता है। इनका क्रेता एवं विक्रेता के रूप्ज्ञ में संकेन्द्रण साप्ताहिक बाजार के पदानुक्रम को प्रभावित करता है। दुकानों की संख्या क्रेताओं की संख्या को प्रभावित करती है।

आंकड़ों का संकलन एवं विधि तंत्र

अध्ययन क्षेत्र में कुल 130 बाजार ग्रामों में से 5% बाजारों का उद्देश्यपरक विधि से 4 बाजारों का चयनित किया गया। प्रस्तुत शोध पत्र प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। प्राथमिक आंकड़ों का संकलन अनुसूची के माध्यम से किया गया। द्वितीयक आंकड़ों का संकलन जिला जनगणना पुस्तिका जनपद पंचायत व ग्राम पंचायत द्वारा प्रकाशित तथा अप्रकाशित ग्रन्थों से किया गया है। सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़ों का सारणीयन कर आंकड़ों के विश्लेषण हेतु निकटतम दूरी विश्लेषण, सड़क मार्ग अभिगमता, केन्द्रीयता सूचकांक प्रभाव क्षेत्र आदि ज्ञात करने के लिए सांख्यकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया। शोध पत्र के प्रभावशाली प्रस्तुति हेतु यथास्थान मानचित्र व आरेखों का प्रयोग किया गया।

तालिका क्र. 1

गरियाबंद जिले में सप्ताह के दिनों के अनुसार बाजारों की संख्या

दिन	बाजारों की संख्या	बाजारों का प्रतिशत
सोमवार	21	14.38
मंगल	24	16.43
बुधवार	21	14.38
गुरुवार	20	13.69
शुक्रवार	19	13.01
शनिवार	18	12.32
रविवार	23	15.75
कुल	**146**	

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि क्षेत्र में सर्वाधिक दिन मंगलवार तथा द्वितीय स्थान पर रविवार को बाजार लगता है। सबसे कम दिन शनिवार को बाजार लगता है।

तालिका क्र. 2
गरियाबंद जिले में विकासखण्डों के अनुसार साप्ताहिक बाजार

विकासखण्ड	साप्ताहिक बाजारों की संख्या	प्रतिशत
छुरा	30	23.07
देवभोग	30	23.07
गरियाबंद	11	8.46
मैनपुर कला	07	5.38
राजिम	52	40.0
कुल	**130**	

बाजार ग्रामों का निकटतम दूरी विश्लेषण

I w & $\frac{\vec{r}A}{\vec{r}E}$, अध्ययन क्षेत्र में निकटतम दूरी परिकलित की गई, जिसका परिणाम निम्नानुसार है :

विकासखण्ड	R_n मूल्य	साप्ताहिक बाजारों के बिखराव की प्रवत्ति
राजिम	0.803	अनियतता की ओर
छुरा	1.64	अल्पसमरूपीय
गरियाबंद	2.8	समरूपीय
देवभोग	0.82	अनियतता की ओर
मैनपुर	1.52	अल्पसमरूपीय

तालिका क्र. 3
चयनित बाजारों का भू–वैन्यासिक प्रतिरूप

निदर्भित बाजार ग्राम	क्षेत्रफल	जनसंख्या	समुद्र तल से ऊँचाई	अक्षांश देशांतर	देशांतर	परिवार	बाजार का दिन	धरातल पत्रक
छुरा– कनसिंधी	638 हे.	919	400–500m.	20^0–44′ 20^0–46′	821^0–15′ 82^0–20′	241	सोम	64/L ($2\frac{1}{2}$लाख)
गरियाबंद– बिन्द्रानवागढ़	2655 हे.	12219	400–500m.	20^0–28′ 20^0–30′	82^0–5′ 82^0–10′	560	मंगल	64/L
देवभोग–गिरसुल	608 हे.	4151	300 m.	19^0–53′ 19^0–57′	82^0–38′ 82^0–40′	1092	गुरु	64/I
मैनुपर – शोभा	512 हे.	1885	600–700m.	20^0–8′ 20^0–10′	82^0–8′ 82^0–72′	529	शुक्र	64/L

स्रोत – धरातल पत्रक एवं जिला जनगणना पुस्तिका, गरियाबंद (रायपुर, 2011)

उपरोक्त तालिका से चयनित बाजार ग्रामों का भूविन्यास स्पष्ट होता है। समुद्र तल से अधिक ऊँचे ग्रामों की जनसंख्या क्षेत्रफल व परिवार कम पाए गए हैं।

तालिका क्र. 4

नदी का नाम	उद्गम स्थल	लम्बाई	मिलन क्षेत्र	विशेषता
पैरी	मातृगढ़ी पहाड़ी से	90 कि.मी.	राजिम में महानदी से	त्रिवेणी संगम बनाती है।
सोन्दुर	नवागढ़ पहाड़ी से	50 कि.मी.	महुआभाठा के पास पैरी से मिलती है	इसमें काजल, लीलगंज, चारागांव, गोगर बाघ नाला मिलते हैं।
तेल नदी	देवडोंगरी की पहाड़ी से	50 कि.मी.	उड़ीसा में महानदी से	महानदी की सहायक।
उदन्ती	पेण्ड्रा से गुरेनाघाट पहाड़ी	130 कि. मी.	उदन्ती नदी से	उदन्ती नदी की सहायक।
इन्द्रावती	देवडोंगरी पहाड़ी	35 कि.मी.	उदन्ती की सहायक नदी	खुर्सी नाला मिलता है।

स्रोत– धरातल पत्रक, सर्वे ऑफ इण्डिया 64/L I मापक 2,50,000

यहाँ पैरी नदी पर 11 जलप्रपात बनते हैं। यहाँ लाल–पीली मिट्टी एवं मध्यम काली मिट्टी पायी जाती है, जिसमें चावल, कपास, तम्बाखू, दलहन, तिलहन, कुल्थी, कोदो, कुटकी, सब्जियाँ आदि का

उत्पादन होता है। यहाँ सघन वनों से दवाईयों के रूप में उपयोगी वनोपज भी प्राप्त की जाती है, इन सबका प्रभाव यहाँ के साप्ताहिक बाजारों में देखने को मिलता है। क्षेत्र में कुल 22 वन पाए गए हैं, जिनकी उपज साप्ताहिक बाजारों में आती है।

सरिता प्रवाह क्रम

सरिता प्रवाह क्रम आंका गया, जिसका परिकलन निम्नानुसार है –

स्ट्रालर के अनुसार

द्विशाखन अनुपात

प्रथम क्रम – 54

द्वितीय क्रम – 10

तृतीय क्रम – 04

चतुर्थ क्रम – 02

हल : 1) प्रथम क्रम / द्वितीय क्रम $= \frac{54}{10}$ = 54

2) द्वितीय क्रम / तृतीय क्रम $= \frac{10}{4}$ = 2.5

3) तृतीय क्रम / चतुर्थ क्रम $= \frac{4}{2}$ = 2.0

$54 + 2.5 + 2.0 = 9.9/3 = 3.3$

R.b. मूल्य 3.3 प्राप्त हुआ है। अतः यहाँ सरिता प्रवाह क्रम आदर्श श्रेणी में शामिल होता है, जिसका प्रभाव कृषि कार्य में होता है तथा कृषि उपजों का प्रभाव साप्ताहिक बाजार केन्द्रों में दिखाई देता है।

जनसंख्या

गरियाबंद, छुरा, मैनपुर ब्लाक जनजातियों का मुख्य क्षेत्र है।

तालिका क्र. 5

गरियाबंद जिला : अनुसूचित जाति व जनजातियाँ

विकासखण्ड	अनुसूचित जाति			अनुसूचित जनजाति		
	पुरुष	स्त्री	कुल	पुरुष	स्त्री	कुल
श्राजिम	1.8	1.84	2.44	1.56	1.616	3.181
बिन्द्रानवागढ़	0.53	0.55	1.37	4.379	4.54	8.92
छुरा	0.633	0.65	1.28	4.6	4.81	9.46
मैनपुर	0.88	0.905	1.78	5.31	5.45	10.76
देवभोग	1.12	1.168	2.29	1.87	1.97	3.84

स्रोतः जिला जनगणना पुस्तिका, रायपुर, 2011

उपरोक्त प्रतिशत जिले की कुल जनसंख्या से निकाला गया, जिससे स्पष्ट होता है कि बिन्द्रानवागढ़, छुरा व मैनपुर में जनजातियों का सर्वाधिक प्रतिशत है। यहाँ गोंड, बिंझवार, कमार, सवरा, हल्बा जनजातियाँ अधिक पायी गई है। ये लोग खेती–किसानी व शिकार का काम करते हैं। नवाखाई, मंडई, जंवारा, छेरवा इनके मुख्य त्योहार हैं। इन त्योहारों का प्रभाव यहाँ के साप्ताहिक बाजारों पर स्पष्ट दिखाई देता है। यहाँ बांस शिल्प, काष्ठ शिल्प का कार्य भी होता है।

भूमि उपयोग

जिले का कुल क्षेत्रफल 4837.21 वर्ग कि.मी. है, जिसमें कृषि भूमि मात्र 161.496 वर्ग कि.मी. तथा वनभूमि 1951.88 वर्ग कि.मी. है। अधिकांश भू–भाग नदियों व पहाड़ियों से आच्छादित है।

पर्यटन

सीतानदी टाइगर रिजर्व, उदन्ती अभ्यारण्य, भूतेश्वर नाथ का मंदिर, सिकासेर डैम, जतमई, घटारानी आकर्षण के केन्द्र हैं। इन पर्यटन केन्द्रों के पास भी साप्ताहिक बाजार लगते हैं।

तालिका क्र. 6
गरियाबंद जिला : बाजार ग्राम

क्र.	विकासखण्ड	कुल गाँव	बाजार ग्राम	बाजारों की संख्या
1.	छुरा	180	30	30
2.	देवभोग	100	24	28
3.	गरियाबंद	176	11	11
4.	मैनपुर	169	6	6
5.	फिंगेश्वर	106	52	66
कुल		**731**	**123**	**130**

स्रोत : जनपद पंचायत द्वारा प्राप्त

स्पष्ट है कि गरियाबंद जिले के कुल 731 गाँवों को मात्र 16.82% बाजार ग्राम ही पोषित कर रहे हैं।

चयनित बाजारों के लगने का समय

1.	कनसिंघी (छुरा)	सायं 4–6 बजे : 30 वर्ष पुराना
2.	गिरसुल (देवभोग)	प्रातः 7–11 बजे : 40 वर्ष पुराना
3.	बिन्द्रानवागढ़ (गरियाबंद)	दोपहर 1 से 5 बजे : 20 वर्ष पुराना
4.	शोभा (मैनपुर)	दोपहर 11 से 2 बजे : 20 वर्ष पुराना

गिरसुल व शोभा बाजार ग्राम आंशिक रूप से नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में शामिल होते हैं।

चयनित बाजारों में दुकानों की संख्या में वृद्धि

बाजार ग्राम	1971	1981	1991	2001	2011	2016
कनसिंघी	-	22	30	36	40	44
गिरसुल	-	150	135	120	100	81
बिन्द्रानवागढ़	-	-	50	65	85	138
शोभा	-	-	18	30	45	49

चयनित बाजारों में क्रेता व विक्रेता

बाजार ग्राम	क्रेता	विक्रेता	
कनसिंघी	310	48	कुल 2473 विक्रेताओं को मात्र 13.34% क्रेता आवश्यकता की पूर्ति कर रहे हैं
गिरसुल	772	90	
बिन्द्रानवागढ़	905	142	
शोभा	486	50	
कुल	**2473**	**330**	

बाजार केन्द्रों में क्रेता–विक्रेताओं का गमन प्रतिरूप

चयनित बाजार		क्रेता			विक्रेता		
	वाहन	**प्रारंभ**	**मध्यम**	**समाप्ति**	**प्रारंभ**	**मध्यम**	**समाप्ति**
कनसिंघी	पैदल	27.7%	–	15.4%	13.5%	–	–
	सायकल	12.5%	–	13.8%	37.5%	–	–
	मोटर सायकल	10.3%	–	32.9%	30.0%	–	–
	बस	–	–	–	–	–	–
	योग–	**50.5**	**–**	**49.5%**	**100**	**–**	**–**
गिरसुल	पैदल	2	–	26	31.1	2.2	–
	सायकल	5	–	34	37.9	13.3	–
	मोटर सायकल	8	–	25	12.2	3.3	–
	योग–	**15**	**–**	**85**	**81.2**	**18.8**	**–**
बिन्द्रानवागढ़	पैदल	–	19.8	19.4	9.8	5.6	–
	सायकल	–	14.3	17.4	28	9.8	–
	मोटर सायकल	–	15.6	14	23.2	9.15	–
	–	–	–	–	12.6	2.1	–
	योग–	**–**	**50**	**50**	**73.2**	**26**	**–**
शोभा	पैदल	–	10	24.6	20	–	–
	सायकल	–	16	20.5	60	–	–
	मोटर सायकल	–	14.4	13.5	20	–	–
	योग–	**–**	**40.4**	**58.6**	**100**	**–**	**–**

क्रेता–विक्रेता का व्यवहार प्रतिरूप

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि क्रेताओं की आवृत्ति बाजार के मध्य समय से समाप्ति के समय तक पायी गई एवं विक्रेताओं की आवृत्ति बाजार के प्रारंभिक समय पर ही लगभग 80% तक हो जाती है, कुछ बचे हुए विक्रेता मध्य समय में बाजार पहुँचते हैं।

क्रय एवं विक्रय शक्ति

बाजार ग्राम	क्रेता	विक्रेता
कनसिंघी	10 से 300 रु.	1120 रु. (लागत के पैसे घटाकर शुद्ध फायदा)
बिन्द्रानवागढ़	20 से 500 रु.	2000 रु.
शोभा	20–500 रु.	900 रु.
गिरसुल	10–500 रु.	1400रु.

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि चयनित बाजारों में क्रेताओं की क्रय शक्ति 10 रु. से 500 रु. के बीच पाई गई एवं विक्रेता सामग्री क्रय करने में जो खर्च करते हैं, उसे विक्रय की कुल राशि में घटाकर औसतन शुद्ध आय बाजार की समाप्ति तक 900 से 2000 रु. के बीच प्राप्त कर लेते हैं।

क्रेता–विक्रेता व्यवहार

वस्तु खरीदी	आवृत्ति (%)	दुकान के प्रकार	बाजार में दुकानों की आवृत्ति (%)
सब्जी	100	सब्जी	40
सेवा प्राप्त करने	70	कपड़ा	8
फैंसी सामान	25	किराना	8
नाश्ता करने वाले	20	चिकन	8
रेडीमेड कपड़ा खरीदता	30	नाश्ता	2
गरम मसाला	20	गरम मसाला	4
चिकन खरीदी	22.5	जूता–चप्पल	4
जूता–चप्पल	27.5	वनोपज	4
वनोपज	15	फैंसी	8
बर्तन	10	बर्तन	5
राशन	18	कृषि बीज	1
कृषि बीज	7.5	बांस का सामान	4
बांस का सामान	6	मछली	2
मछली	15	सेवा प्रदाता	2

तालिका क्र. 7

बाजार ग्राम	प्रभाव क्षेत्र	ट्रेड एरिया
कनसिंघी	4.55	93.45
गिरसुल	5.17	84.16
बिन्द्रानवागढ़	6.077	116.1
शोभा	4.33	58.9

प्रभाव क्षेत्र = $\frac{\bar{x} \text{ क्रेता} + \bar{x} \text{ विक्रेता}}{2}$

ट्रेड एरिया त्र बाजार प्रभाव क्षेत्र^2 x $\pi\left(\frac{22}{7}\right)$

उपरोक्त सूत्र के आधार पर प्रभाव क्षेत्र एवं ट्रेड एरिया निकाला गया। तालिका से स्पष्ट है कि सबसे बड़ा प्रभाव क्षेत्र बिन्द्रानवागढ़ का एवं ट्रेड एरिया है तथा शोभा बाजार का प्रभाव क्षेत्र व ट्रेड एरिया दोनों ही छोटे पाए गए।

तालिका क्र. 8
चयनित बाजारों का पदानुक्रम

चयनित बाजार	कुल अधिकार	केन्द्रीयता सूचकांक	पदानुक्रम
कनसिंघी	122.269	7.306	III
गिरसुल	636.96	38.063	II
बिन्द्रानवागढ़	838.76	50.12	I
शोभा	75.43	4.481	IV

सूत्र – $Ci = \frac{os}{MS} \times 100$

OS = निरीक्षित स्कोर

MS = अधिकतम संभावित स्कोर

निरीक्षित स्कोर (1) बाजार ग्राम की जनसंख्या (2) बाजार में क्रेता–विक्रेताओं की औसत उपस्थिति (3) सड़क अभिगम्यता (4) रेल अभिगम्यता (5) दुकानों की खुलनशीलता (6) समयावधि (7) बाजार का प्रभाव क्षेत्र (8) बाजार का ट्रेड एरिया (9) दुकानों के प्रकार (10) नीलामी की राशि के आधार पर निकाला गया।

परिकलन से स्पष्ट होता है कि प्रथम पदानुक्रम स्तर पर बिन्द्रानवागढ़, द्वितीय पदानुक्रम पर गिरसुन तृतीय पदानुक्रम पर कनसिंघी एवं चतुर्थ पदानुक्रम पर शोभा का बाजार पाया गया।

तालिका क्र. 9
चयनित बाजारों का बाजार चक्र

चयनित बाजार	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चक्र
कनसिंघी	कनसिंघी	कोटागांव	चरोदा	रसेला	कोसमी	छुरा	खड़मा	पूर्ण
गिरसुल	कदलीगुड़ा	देवभोग	उरमाल	गिरसुल	गोदरापदर	सीनापाली	खुड़गाँव	पूर्ण
बिन्द्रा–नवागढ़	मैनपुर	बिन्द्रा–नवागढ़	मालगाँव	रसेला	गरियाबंद	आमदी	धवलपुर	पूर्ण
शोभा	मैनपुर	भूतबेड़ा	गौरगाँव	कोकड़ी	शोभा	कुल्हाड़ीघाट	रिमगाँव	पूर्ण

उपरोक्त बाजार चक्र क्रेताओं का है। चारों चयनित बाजार ग्रामों में निकटतम दूरी और अधिकतम क्रेताओं की आवृत्ति के आधार पर इसे ज्ञात किया गया। यहाँ क्रेताओं का बाजार चक्र पूर्ण है।

विक्रेताओं का बाजार चक्र

विक्रेता अपने निवास ग्राम से चयनित बाजार ग्रामों में सामग्री विक्रय करने आते हैं और कई विक्रेता विक्रय के साथ–साथ कृषि कार्य भी करते हैं। अतः विक्रेताओं का बाजार चक्र निम्नानुसार पाया गया।

तालिका क्र. 10
विक्रेताओं का बाजार चक्र

चयनित बाजार	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चक्र
कनसिंघी	मैनपुर	बिन्द्रानवागढ़	–	धवलपुरडीह	–	छुरा	–	अपूर्ण
बिन्द्रानवागढ़	कदलीमुड़ा	देवभोग	मालगाँव	गिरसुल	गोदरापदर	सीनापाली	झरगाँव	पूर्ण
थ्गरसुल	मैनपुर	भूतबेड़ा	–	कोकड़ी	शोभा	–	–	अपूर्ण
शोभा	मैनपुर	भूतबेड़ा	–	कोकड़ी	शोभा	–	–	अपूर्ण

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि मात्र बिन्द्रानवागढ़ में ही पूर्ण बाजार चक्र पाया गया। शेष तीनों बाजारों में विक्रेताओं का बाजार चक्र अपूर्ण है।

- यहाँ के विक्रेताओं के निवास स्थान से अन्य बाजार ग्रामों की दूरी का होना।
- कृषि कार्य में खाली दिनों में व्यस्त होना।
- अपने ही गृह ग्राम में सामग्री क्रय करना।

इन कारणों से यहाँ बाजार चक्र अपूर्ण पाया गया।

Significance Test

दुकानों की संख्या व क्रेताओं की संख्या की बीच सहसम्बन्ध

अध्ययन क्षेत्र में कुल 322 दुकानें पाई गईं। कुल 14 प्रकार की दुकानें पाई गई अर्थात् कुल दुकान संख्या का मात्र 4.3: ही दुकानों में वस्तुओं के प्रकार पाए गए। इसी से यहाँ के क्रेताओं की मांग स्पष्ट

होती है। मांग का प्रतिशत बहुत कम है। दुकानों की संख्या व क्रेताओं की संख्या के बीच सहसम्बन्ध गुणांक निकाला गया।

सूत्र – $$\frac{\sum dx.dy / N}{\sigma_x.\sigma_y} = \frac{7995.5}{8738.51} = 0.9149$$

उच्च स्तर का धनात्मक सहसम्बन्ध प्राप्त हुआ, जिसका t-परीक्षण किया गया –

सूत्र – $$t = rs\sqrt{\frac{(n-2)}{1-(rs)^2}} = 7.91$$

7.91 का Significance level 0.05 पर डिग्री ऑफ फ्रीडम d.f 3 पर सारणी मूल्य से परीक्षण किया गया। सारणी मूल्य . आया, जो परिकलन मूल्य से कम है। अतः दुकानों की संख्या व क्रेताओं की संख्या के सार्थक सहसम्बन्ध है। शून्य की परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

सर्वेक्षित क्षेत्र का अधिकांश भाग वनाच्छादित व पहाड़ियों से आच्छादित है। यहाँ परिवहन मार्गों का अभाव है। 50 प्रतिशत से अधिक दुकानें कृषि उपज तथा 10 प्रतिशत से अधिक दुकानें वनोपज का पाई गई हैं। इनके अलावा अन्य सामग्रियों की मांग क्रेताओं में बहुत कम है। अधिकांश क्रेता व विक्रेता अनुसूचित जनजाति के हैं, जिनमें युवा वर्ग की संख्या अधिक 80 प्रतिशत पाई गई है। महिलाओं की भूमिका 10 प्रतिशत से कम पाई गई है। बाजार के माध्यम से यहाँ विक्रेता 6,000 से 15,000 रु. तक माह में कमा पाते हैं। यहाँ 11 कच्चे–कच्चे चबूतरे हैं। 20 विक्रेता बाहर से सामग्री खरीद कर लाते हैं।

वर्षा ऋतु में यहाँ बाजार पहुँच मार्ग कीचड़ से आच्छादित हो जाता है। शौचालय, शेड, चिकित्सालय, बैंक का अभाव है।

सुझाव

कच्ची सड़कें व पगडण्डियों को पक्का मार्ग बनाने की आवश्यकता है। ग्रामीण सड़कों व पगडण्डियों को मुख्य मार्ग से जोड़ने की आवश्कता है, ताकि बड़े साप्ताहिक बाजारों से छोटे साप्ताहिक बाजार जुड़ सकें। शेड्स, बैंक, चिकित्सालय, शौचालय एवं सुरक्षा हेतु पुलिस चौकी की व्यवस्था हो जाने से यहाँ के बाजारों की गुणवत्ता बढ़ेगी। बाजारों में महिलाओं की भूमिका भी बढ़ेगी। दुकानों के प्रकारों एवं संख्या में भी वृद्धि होगी। इस प्रकार बाजारों का प्रभाव क्षेत्र बढ़ेगा।

सन्दर्भ

- Agrawal, P.C., *Weekly market size and service area, Bastar district, M.P.*, The Indian Geographical Journal, **43(1-4), (1968), pp. 29-33.**
- Ali Mushir & Khan Nizamuddin, *A New Approach to the Classification and Trade Area of Periodic Markets: Shahjahanpur District A case Study; National Geographer*, Vol. XLIII, No. 1+2 (Jan-June, July-Dec.**2008**), **pp. 153-168.**

- Dixit, R.S., *Market Cycles, Indian Jouranal of Marketing Geography*, 2(2), (**1984**), pp. **102-105**
- Dixit, R.S., *Traders Movement and Travel Pattern: A case study of Hamirpur District*, U.P., Transation, Indian Council of Geographers, **15 (2985), pp. 11-14.**
- Jana, M.M., *Hierarchy of Market Centres in Lower Silabati Basin*, Geographical Review of India, 48(1), **(1986), pp. 64-72.**
- Mathur, R.S., *Consumer Behaviour in Markets of Jaipur cualled City*, Indian Geographical Studies, 19, **(1982), pp. 28-41.**
- Saviramath V.B., *The Hierarchy of Market Centres: A case study of Bellary District*; National Geographical Journal of India; **Vol.55, Pts(3), September, 2009, pp.73-80.**
- Simalai, J.S., *Hierarchy of Market Centres in Bara Banki District*, Uttar Pradesh; National Geographer, **Vol. XXXVIII, No.-1 (Jan-June, 2003), pp. 33-52.**
- Singh, J., *Consumer Travel Pattern in a Backward Economy-Region*, The National Geographical Journal of India, **24(3-4), (1978).**